मनुष्य बनो

मार्च १९७६

प्रेरणा शक्ति, शुभ संकल्प,

क्षमा,   प्रेम,

निष्काम कर्म, ब्रह्मचर्य पालन,

क्षक

दयाल फकीरचन्दजी महारा

मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब

'मनुष्य बनो' के नियम

ोरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टि-
से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार
शीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य
ा और बनाना।

महात्माओं और ऋषियों की बाणी को सरल, सुबोध और साधा-
ाषा में प्रचार करना।

जिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान
जायगा।

धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

त्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को
लेख सम्पादक के नाम भेजे जांय।

को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य-
चाहिये। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड आना चाहिये। वी०पी०
पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ५-२५ है।

सी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां
ने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले वह अगला अंक
में एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुँचने पर ही दूसरी
ना मूल्य भेजी जा सकेगी।

म्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर
ो भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफसाफ
चाहिये। और पते की तबदीली भी।

देवीचरन मीतल

सम्पादक

R.S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

मनुष्य बनो

२६	बैशाख सं० २०३३ वि० मई, १९७६	संख्या ८

प्रार्थना

१ दीन बन्धु दयाल स्वामी, तुम दया के सिन्ध।
निज दया से बन्ध काटो, छूटै द्वन्द का वन्ध ॥ १ ॥
२ काल कर्म का कड़ा बन्धन, जीव रहे लिपटाय।
बिधि न जानें छूटने की. उरझ उरझ फँसाय ॥ २ ॥
३ दया कीजे भक्ति दीजे, तार लीजे आप।
पुन्य फल तुम्हरे चरन में, कटें जग के पाप ॥ ३ ॥
४ सुरत शब्द का योग निर्मल, सहज सुगम सुहेल।
जीव पावें परम पद को, चित चरनन से मेल ॥ ४ ॥
५ राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी नाम।
सब जपैं हित चित से निस दिन, पावें अमृत धाम ॥५॥

क्या आपने कभी ध्यान दिया है ?

'मनुष्य बनो' जो आपकी सेवा कर रहा है, और अत्यन्त, उपयोगी, आत्मिक, मानसिक, शारीरिक तथा व्यवहारिक शिक्षा दे रहा है, यह सब मानव जाति के कल्याण के लिये ही कर रहा है। इसमें कोई स्वार्थ नहीं है, इसके पास कोई अपना फंड नहीं है और न कोई अन्य आमदनी है। केवल चन्दे से ही यह चलाया जारहा है मगर चन्दा न मिलने तथा मारे जाने से इसके चलाने में कठिनाई होती रहती हे। इसी कारण चन्दा भेजने की बार बार सूचनायें दी जाती हैं ताकि काम में रुकावट न आये। यह मजबूरी है क्योंकि बिना पैसे के दुनिया का कोई काम नहीं चलता। छपाई, कागज, ढाक खर्च आदि में पैसे की आवश्यकता रहती है।

हम ग्राहक बन्धुओं से प्रार्थना करते हैं कि वे अपना चन्दा स्वयं भेज दिया करें ताकि हमको सूचना न देनी पड़े।

क्षमा याचना

कुछ समय से शरीर अस्वस्थ रहता है इस कारण इसके समय पर प्रकाशित होने और भेजने में देर हो जाती है। इसका मुझे खेद है। शीघ्र ही प्रबन्ध किया जा रहा है कि आपको समय पर मिलता रहे। पाठक क्षमा करें।

देवीचरन 'मीतल'

दयाल स्वरूप नन्दू भाई जी महाराज की जीवनी

इस अंक में शुरू होगई है। अगले अंक से उनकी तपस्या, परिश्रम, सेवा और साहस के कार्यों का विवरण आरम्भ होगा। जो भाई उनकी जीवनी मँगवाना चाहें वह तुरन्त लिख दें।

परमदयाल फकीरचन्दजी महाराज का अमरीका को प्रस्थान

महाराज जी ता० ५ मई १९७६ को हवाई जहाज से अमरीका चले गये। वहां से जो सूचनायें आयेंगी वह समय समय पर प्रकाशित होती रहेंगी।

भारत सरकार की सफलता के दस वर्ष

विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय द्वारा प्रकाशित लगभग ३० पेमल्फेटस प्राप्त हुये हैं जिनमें भारत के विभिन्न विभागों तथा कार्यों में उन्नति का विवरण दिया गया है। इसमें संदेह नहीं कि श्रीमती इन्द्रागाँधी के समय में पिछले दस वर्ष में आशातीत उन्नति हर विभाग में हुई है। इस प्रचार से लोगों को देश की उन्नति का पता लगेगा और उनमें उत्साह का लहर जाग्रत होगी। आपात कालीन घोषणा से देश की स्थिति में बहुत कुछ सुधार हुआ है। लोगों में अनुशासन तथा अपने कर्त्तव्य कर्म में जुटे रहने की भावना पैदा हुई है। सतर्कता आई है। अपराधों में भी रोकथाम हुई है। अभिप्राय यह है कि आपात स्थिति के कानून से देश में बड़ा परिवर्तन हुआ है।

जहाँ तक 'मनुष्य बनो' का सम्बन्ध है उसमें कभी कोई राजनैतिक मामलों में टीका टिप्पणी नहीं की जाती है क्योंकि यह तो एक धार्मिक पत्र हैं और मानव जाति के कल्याण के लिये बराबर काम कर रहा है। परम दयाल परमसन्त फकीरचन्द जी महाराज २५-३० वर्ष से अपनेसत्संगों में आत्मिक ज्ञान के साथ-साथ निम्न विषयों पर भी प्रवचन कहते रहते हैं जो श्रीमती इन्द्रागाँधी के २० सूत्रीय कार्यक्रम में बड़ा भारी योग दान है। अपने प्रवचनों जो वे प्रायः कहा करते हैं उनका सारांश यह है :—

(१) ब्रह्मचय का पालन करो। संतान कम पैदा करो। संतान संतान की इच्छा से पैदा करो। आजकल की संतान अनइच्छित है जो दुख का कारण बन रही है। थोड़ी संतान से अन्न वस्त्रादि की बचत होगी जो दूसरों के काम आयेगा यह बड़ा भारी पुन्य कर्म होगा।

।। मनुष्य बनो ।।

) सरकारी कानूनों का पालन करो और अनुशासन में रहो।

। पबलिक प्रापर्टी जो ४० करोड़ लोगों की सम्पत्ति है उसे करो। यह पाप है। इस पाप कर्म का फल भोगना

हड़तालें, घेराव, हिंसात्मक कार्य न करो। महात्मा गांधी और था जब विदेशी सरकार थी। आज अपनी सरकार कार्यों से देश को हानि पहुँचती है।

अपनी नीयत को शुद्ध रक्खो। बुरी नीयत के फल से बच ।

मनुष्य बनो। न हिन्दू न मुसलमान, न ईसाई न सिक्ख नवता के नियमों का पालन करो। यही प्रवचन 'मनुष्य ा में भी प्रकाशित होते रहते हैं।

क्या अच्छा हो

रत सरकार मानवता के प्रचार की ओर भी ध्यान दे थति आपात कालीन घोषणा के पश्चात् उत्पन्न हुई है ो जाय। लोग अपने कर्त्तव्य का पालन स्वयमेव करने

की शिक्षा धर्म निरपेक्ष है। समस्त धर्म सम्प्रदाय नेयमों को मानते हैं मगर उसकी शिक्षा का कहीं कोई जितना भौतिक पदार्थों की उन्नति की ओर ध्यान है न मानवता की शिक्षा की ओर होना आवश्यक है।

देवीचरन मीतल

सम्पादक

भोजन और राधास्वामी पंथ

(ले० महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज)

(एक शेर का अर्थ) इतना ठूँस ठूँस कर भोजन न कर कि तेरे मुँह से बाहर निकलने लगे। न इतना कमी के साथ खा कि कमजोरी से जान निकलने का भय रहे।

राधास्वामी मत पर प्रायः लोग इस तरह की आपत्तियां किया करते हैं कि राधास्वामी मत के अनुयायी हमेशा दुर्बल और दुबले पतले होते हैं। आरम्भ में वास्तव में यह दशा थी कि प्रायः इस तरह की शिकायतें सुनी जाती थीं। उसका कारण यह नहीं है कि राधास्वामी मत की शिक्षा में कोई नुक्स है किन्तु असलियत यह है कि अभ्यासियों को जो आध्यात्मिक रस या स्वाद अधिकता से मिलने लगा तो शारीरिक आराम की ओर से इनको उदासीनता होती गई। इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि इसमें से किसी को तपैदिक हुई और किसी को बवासीर हो गई और नुक्ताचीनी करने वालों को दोष निकालने का अवसर मिल गया।

यह केवल राधास्वामी मत ही का आरम्भ के समय की दशा नहीं थी किन्तु हमको याद है कि जिस समय मेडम वलवेस्की और करनल अरकाट साहिबान थ्योसोफीकल सोसाइटी के नियमो का प्रचार करने लगे तो उसके मैम्बरों में अजीब ढंग वाली सूरतें पैदा होगईं। इनमें से कोई लम्बे बालों वाला था किसी की छोटी उँगली का नाखून इंचों बढ़ा हुआ थ। चाल ढाल में विशेष प्रकार का परिवर्तन आगया। इनमें भी अधिकतर दुर्बल आदमी अधिक सख्या में में होगये। लेकिन जिस तरह राधास्वामी पंथ निर्दोष है उसी तरह थ्योसोफीकल सोसाइटी के जिम्मे किसी तरह का नुक्स नहीं लगाया जा सकता। हाल में हम देखते हैं कि पंजाब में देव समाजियों की सूरत विशेष प्रकार की निखरी हुई रहती है। इनमें भी शारीरिक कमजोरी रहती है। यह किसी सोसाइटी का दोष नहीं है किन्तु

।। मनुष्य बनो ।।

लोग जिस समय समता के नियम का उल्लंघन करते हुए
ता और न्यूनता की ओर झुकते हैं तो इस प्रकार की दशाओं
ा होना अनिवार्य है।

सत्पुरुष राधास्वामी दयाल ने कहा है—

भोजन बहुत न खा तेरे भले की कहूं।

ाँ अधिक भोजन करने के विरुद्ध बेशक हिदायत कीगई है
जो बहुत खाता है उसके चित्त का रुझान आध्यात्म की
म होता है। मस्तिष्क की धार भोजन के पचाने के अतिरिक्त
सी ओर का ध्यान नहीं दे सकती। अधिक खाने वाला
के मंडल में गिरता जाता है। इसमें तनिक भी सन्देह की
ा नहीं कि अधिक खाने वाले को लोग घृणा की
देखते हैं किन्तु उनका मंशा यह न समझना चाहिये कि
ु वारे में आवश्यक्ता से अधिक कमी करदी जाय। खाओ
मता का ध्यान रहे।

लोग भोजन के मामले में समता की पाबन्दी करते है उनको
होता है। जो अधिक खाते हैं वे प्रायः बीमार रहते हैं।
ास्थ्य बिगड़ा रहता है।

हैं कि एक बार अन्न देवता विष्णु भगवान के दरबार में
शिकायत की कि लोग मुझे अनेकों ढंग से अधिकता के
ा करते हैं और मुझे बिना आवश्यकता के हानि पहुंचाया
विष्णु भगवान ने उत्तर दिया —"मैं क्या करूँ ! हाँ तुम
अपना बदला ले सकते हो कि जो व्यक्ति तुमको आव-
अधिक खाय, तुम उसे खाजाया करो ।" तब से अधिक
के पीछे हैजा, दिक, पेचिस कब्ज आदि के हजारों रोग
। काम काज करना तो दूर, जब सूझती है सोने की
क्या यह अच्छा है! जिस तरह अधिक भोजन वर्जित है
कम भोजन भी स्वास्थ्य का शत्रु है।

स्वास्थ्य और खुशी का सम्बन्ध अधिकतर पेट ही से है। जब तक यह पेट प्रसन्न है ईश्वर भी प्रसन्न है। जब पेट अप्रसन्न हो जाता है तो ईश्वर भी अप्रसन्न हो जाता है।

(शेरों का अर्थ) मनुष्य की खुशी का सामान उसका पेट है। यदि सहूलियत के साथ पेट की तृप्ति का मामला चला जाता है तो फिर और अधिक किसी बात की परवाह नहीं है। चार विरोधी तत्व जल, मिट्टी, अग्नि और वायु पेट के खुश रहने के कारण इकट्ठे खुशी से रहते हैं। यदि इनमें से एक भी बढ़ गया तो फिर जान की खैरियत नहीं है।

'दुनियां में सारे बगड़े वखेड़े हैं पेट के'।

इसी पेट की सन्तुष्टि पर भक्ति भाव, भजन, पूजा, स्वास्थ्य अभिप्राय यह कि सब निर्भर है। यदि पेट भरा हुआ है तो हर बात सूझती है और यदि खाली है तो सब से पहिले खाली पेट वाले का साथ ईश्वर छोड़ देता है। दूसरे का तो कहना ही क्या है। क्या कभी भूके पेट ने भी ईश्वर को याद किया है।

(शेर का अर्थ) यदि रोटियाँ प्राप्त हैं तो ईश्वर के साथ भी चित्त लगेगा। यदि रोटियों का ठिकाना नहीं है तो चित्त परेशान रहेगा और ईश्वर को कौन याद करेगा!

कबीर खुद्या कूकरी, करत भजन में भंग।
ताको टुकड़ा डालकर, सुमिरन करो निशंक॥

कबीर साहब कहते है कि भूक कुतिया है जो हर समय भौंकती रहती है और भजन में भंग डालती है। इसको टुकड़ा डाल दो और फिर खुशी से हरि भजन में लग जाओ।

यदि पेट को भोजन नहीं दिया जाता तो आंतें अन्दर ही अन्दर पेट को चाटने लगती हैं और दिमाग का जमा किया हुआ भंडार खर्च होने लगता है। स्वभाव में खुश्की आजाती है। रक्त जलने लगता है। आंतें सुकड़ती हैं। तरह तरह के रोग लग जाते हैं।

बातें भोजन की कमी के परिणाम हैं।

जो लोग अधिक खाते हैं उनके बारे में सुनो। पुराणों का
ापति पेट का नाम है। यह संस्कृत धातु "दक्ष" बढ़ने से
है। यह दक्ष प्रजापति ब्रह्मा का पुत्र कहलाता है इसके
ां है। इनमें से २७ चन्द्र को व्याही हैं और १७ कश्यप
व्याही हैं जिनकी सन्तान सारे विश्व में फैली हुई है।
क पुत्री 'सती' शिव की अर्द्धांगिनी थी। शिव कहते हैं
पी प्राण वायु को और सती कहते हैं जीवन को। जीवन
है प्राण से। इसी दृष्टि से सती शिव की स्त्री है। दक्ष
यज्ञ करते हुए सब को उसका भाग निकाल निकाल कर
ता है जिस पर सब का जीवन निर्भर है यहां तक कि
कान्ति व तेज जिसे अलंकार की भाषा में चन्द्र कहते हैं
सी दक्ष के बाँटे हुए भाग पर निर्भर है। इसी तरह कश्यप
सम्पूर्ण विश्व का उत्पन्न करने वाला है वह भी जीवन का
सके साथ दक्ष की १७ पुत्रियां व्याही हैं। इसका अर्थ
पूरे पेट के प्राणी इसी दक्ष प्रजापति के देन पर रहते हैं।
जापति अर्थात् दक्ष ने यज्ञ किया, अन्न की आहुतियां
कर दीं। कल्याणरूपी शिव का ध्यान नहीं रक्खा जो
कहलाता है और उसकी अर्द्धाङ्गिनी सती को अप्रसन्न कर
व भोजन अधिकता के साथ पेट में गया। सती अर्थात्
दम घुटने लगा। उसी समय प्राण का दक्ष के ऊपर कोप
उसने आकर उसका सिर काट दिया, इसका अभिप्राय
ो खाने पीने के विषय में बदअहतयाती करता है, वह
के साथ बड़ी शत्रुता करता है। दवा इलाज हुआ कुछ
लक्षण प्रगट हुए मगर भय अत्यन्त था। दक्ष के सिर पर
र रखने का यही मन्तव्य है।

ाणिक कथा का अभिप्राय यह है कि यदि पेट ठूँस ठूँस

भरा जाता है तो साँस लेने में कष्ट होता है। प्राण का कोप
ा है और स्थिति अकथनीय हो जाती है। वीरभद्र (शिव के गण)
ार आदि उत्पन्न होकर दक्षकी दुनियां को बीमार करते हैं।
से सीधी सीधी बात भी नहीं निकलती। अधिक भोजन करने
बारे में इतना ही पर्याप्त है।

अधिकता और न्यूनता को छोड़ कर जो लोग समता का मार्ग
ण करते हैं उन्हें कोई शिकायत नहीं होता। कहावत है—
शेरवां बादशाह ने अरबस्तान की ओर बहुत से पारसी हकीम
जे ताकि उसकी अरब की प्रजा को दवा इलाज का लाभ पहुंचता
ई। यह हकीम वर्षों अरब में रहे लेकिन वहां एक भी बीमार
नके पास नहीं आया और न किसी ने दवा दारू के लिये कहा।
ह स्वयं अरबों से मिलकर पूछने लगे—"भाई क्या कारण है कि
म बीमार नहीं होते और हम हकीमों के इलाज को सेवा से लाभ
हीं उठाते।" अरबों ने उत्तर दिया—"खाने पीने के हमारे दो
नयम हैं। प्रथम तो जब तक भूक नहीं लगती हम खाते नहीं। दूसरे
भी तृप्ति में थोड़ी कमी रह जाती है कि हम खाने की ओर से
अपना हाथ खेंच लेते हैं।" पारसी हकीमों ने कहा—"तब तुमको
हमारी सेवा की आवश्यक्ता नहीं है" और वहां से ईरान में चले आये
और बादशाह से कहा—"हमको व्यर्थ अरब की ओर भेजा गया।
अरब समता के साथ खाते पीते हैं। उनको बीमारी नहीं होती।
इसलिये उन्हें दवा इलाज की आवश्यकता नहीं है।" समता के
साथ खाने पीने में इतना कहना पर्याप्त समझना चाहिये।

जो लोग राधास्वामी मत के अनुयायियों के बारे में ऐतराज
किया करते हैं उनको स्वयं सोचना चाहिये कि क्या राधास्वामी
मत जो शिक्षा देता है वह वास्तव में रोग का कारण है या अज्ञानी
क्षुद्र दृष्टि वाले सत्संगियों का समता में न रहना उनके स्वास्थ्य को
हानिकारक होरहा है।

ाभ्यास करने से मन सूक्ष्म और पवित्र बनता है। मन की ा से शरीर भी सूक्ष्म और शुद्ध बनता है। रह दोनों को सुखदायनी दशा में रहना चाहिये। स्वस्थ स्थ शरीर में रहता है। यह गलती कम समझ सत्संगियों जो अन्तरीय रस के ख्याल से शरीर की ओर से बिल्कुल ा बन जाते हैं और अपना स्वास्थ्य बिगाड़ लेते हैं।

—o—

उपदेशामृत

(ले० महर्षि शिवव्रतलालजी महाराज)
(सत्संगत जनवरी १९३१ से)

न पूजा का उद्देश यह है कि कम से कम साक्षात भलाई त्रता के ख्याली प्रेम का लाभ उठाया जाय। जो ऐसा नहीं इ अपने मन के हाथों से बहुत तङ्ग रहते हैं और अपनी बढ़ाते रहते हैं।

न काम काज के लिये है। जो रात दिन नेक विचार और में व्यस्त रहते हैं उनके मन में मालिक बसता है। जो ते हैं उनके मन में शैतान बसता है।

ो ने सच कहा है कि बेकार आदमियों का मन शैतान का है। इनसे किसी की भलाई तो होती नहीं। हाँ झगड़े शा पैदा होते रहते हैं।

अपने गले में कफनी डालते हैं। कफनी पहिनने का अभि- इ कि वह जीते जी मर जाते हैं। दूसरे लोगों का कफन व्यक्ति करता है। साधू अपना धन कफन आप करते हैं।

साधू का जीवन अपना नहीं होता क्योंकि जिस दिन उसने कफनी नी उसी दिन यह प्रण कर लिया कि अब जीवों की सेवा के वाय संसार में कोई कर्त्तव्य नहीं रहा।

अष्टावक्र जी ऋषि थे। उनका शरीर आठ जगह से टेड़ा था। ाष्य उनको चौराहे पर बैठा कर चले गये। राजा की सवारी ारही थी। कुछ आदमी आये और उनसे बोले—'ऐ बदतमीज ाधू! तू चौराहे पर क्यों पड़ा है?" अष्टावक्र ने कहा—'तुम अन्धे ा। अपनी राह लो।" सतानन्द मंत्री आया। उसने कहा—"बाबा ो महाराज! राजा की सवारी के समय आपको चौरास्ते पर नहीं हना चाहिये।"

अष्टावक्र ने उत्तर दिया—"ऐ मंत्री! क्या तू भी अन्धा होगया ?"

इतने में राजा जनक स्वयं आगये। इसने हाथ जोड़ कर प्रार्थना ी—"महाराज! आपको किसी ऐसी जगह आसन जमाना चाहिये जहां कष्ट न हो। यह रास्ता है।" अष्टावक्र ने उत्तर दिया—

"राजा! बड़ा खेद है कि तू भी अन्धा होगया है।"

अष्टावक्र का सबके लिये एक ही उत्तर था। इसने सबको अन्धा कहा लेकिन सोचने समझने की बात यह है कि बिना जाने पूछे उसने सेवक को सेवक, मंत्री को मंत्री और राजा को राजा कहा। जनक ने पूछा—"महाराज! आप न मुझे जानते हैं और न मैं आपको जानता हूं, लेकिन आपने हम तीनों को कैसे पहचान लिया।"

अष्टावक्र हँसा। "तुम्हारी बातों से। जो सेवक है वह सेवक जैसी बात करता है। उसके कथन में कमीनापन के सिवाय क्या रहेगा। जो मंत्री है वह सभ्यता के साथ बोलेगा। फिर राजा का कथन तो सबसे अधिक सभ्य और निखरा हुआ होता है। इसलिये मैं तुम्हारी बातों को सुनकर समझ गया कि तुममें से कौन क्या है।"

क ने फिर पूछा—"यह सब तो ठीक है लेकिन आपने दूरदर्शी हुए सबको अन्धा क्यों कहा ?"

अष्टावक्र हँसा—"मैं साधू हूं। तुमको भलाई का रास्ता दिखाने ा हूं। मैंने जो बात कही है वह चेताने के लिये कही है। यदि में तमीज होती तो बिना कहे सुने असली दशा को जान लेते। ा ऐसा नहीं किया इसलिये मैंने समझ लिया कि अभी तक ारी आंखों में देखने की वह शक्ती नहीं आई जो किसी पहिचान ाले मनुष्य की योग्यता कही जा सकती है। तुम देखते हो कि शरीर आठ जगह से टेढ़ा है। हिलने डोलने के योग्य नहीं हूं। अच्छा होता कि तुमने चौराहे से उठाकर किनारे रख दिया । फिर मैं तुमको अंधा क्यों कहता। यह शब्द मैंने कोई कठोर की दृष्टि से नहीं कहे, किन्तु कोई उद्देश की दृष्टि से कहे।" ऋषि को सम्मान के साथ लिवा लेगया।

कागा का सों लेत है, कोयल का को देय।
मीठे वचन सुनाय कर, जग अपनी कर लेत ॥
कड़ुवे वचन न बोलिये, अहं आनिये नाहिं।
तेरा प्रीतम तुझ में, दुशमन भी तुझ मांहि ॥
बोली तो अनमोल है. जो कोई जाने बोल।
हिये तराजू तोल कर, तब मुख बाहर खोल ॥

सत्संग

परम दयाल परमसन्त फकीरचन्द जी महाराज
(मानवता मन्दिर होशियारपुर २९-१२-७४)

बन्दनम् सतज्ञान दाता, बन्दनम् सत ज्ञान मय।
बन्दनमु निर्वाणराता, बन्दनम् निर्वाण मय ॥

भक्ति मुक्ति योग युक्ति आपके आधीन सब।
आप ही हैं सिन्धु सद्गति, जीव जन्तु मीन सब ॥
आप गुरु सत्गुरु दया, और प्रेम के भडार हैं।
आप कर्त्ताधर्त्ता हैं, कर्त्तार जगदाधार हैं ॥
ऋद्धि सिद्धि शक्ति नौनिद्ध, आपके आधीन सब।
बच गया भव दुख से जो, आया शरण में आपके ॥
भक्ति दीजे नाम की, सत्संग में विश्राम दे।
राधास्वामी अपना कीजै, नाम में विश्राम दे ॥

आप लोग स्कूल मास्टर सत्संग के लिये आये हैं। मैं आपको धोखा देना नहीं चाहता। इस ससार में आज तक जितने भी धर्म और पंथ आये, मेरे अनुभव के आधार पर सबने ही लोगों को अपनी ओर खेंचने के लिये रोचक और भयानक बातें कहीं ताकि लोग उनकी शरण में आयें।

आप देखो कि आज कल क्रिसमिस मनाया जारहा है। जगह जगह के लोग यूरोसलेम में जमा होरहे हैं। क्यों ? वह यह समझते हैं कि हजरत ईसामसीह की शरण में जाने से हमारे पाप क्षमा हो जायंगे। हिन्दुओं में कुम्भ पर लाखों आदमी जाते हैं और वहां स्नान करने में यह भी यही समझते हैं कि हमारे पाप क्षमा होजायेंगे इसी गरज से कोई गुरुद्वारे में आता है, कोई चिन्तपूर्णि जाता है। कोई कहीं जाता है और कोई कहीं। यही दशा आज कल गुरुमत में है कि गुरु धारण करलो और नाम लेलो, तुम्हारे अन्त समय पर तुमको गुरु लेजायगा।

लोग मरते है और मरते समय यह कहते हैं कि बाबाजी आये, कोई कहता है कि हवाई जहाज लेकर आये. कोई कहता है कि कार लेकर आये और हमको लेजा रहे हैं। राधास्वामी कहा और प्राण निकल गये। कोई कहता है कि मेरे अन्तर बाबाजी आये

झे बच्चा दे गये। कोई कहता है कि मैं नदी में डूब रहा था
ाजी को याद किया। आप आये और मुझे डूबने से बचा
ऐसी ऐसी घटनायें मेरे सामने आती हैं कि बुद्धि चक्कर
है। यह केवल मेरे सत्संगी ही नही कहते दूसरे डेरे और पंथों
गी भी अपने अपने गुरुओं के बारे में ऐसी बातें कहते हैं
कहीं नहीं जाता। चूंकि मुझे शिक्षा के बदलने की आज्ञा
ाये अपने जीवन के अनुभव के आधार पर कहता हूं कि
रोचक बातें हैं। गुरुओं और महात्माओं ने या तो जीव
ी नहीं थे इसलिये सचाई नहीं बताई या अपने डेरों, अपने
र रुपये पैसे के लिये सचाई वर्णन नहीं की और बात को
क्खा। मैंने उन सन्तों की दशा देखी है जिनके बारे में लोग
कि वह सन्त समय पर जीव को लेगये। उनकी क्या दशा
ा कष्ट उठाया मगर अपने कष्ट को दूर न कर सके।
मैं इस परिणाम पर आया कि हर एक मनुष्य को जो कुछ
वह उसका अपना ही कर्म है। जैसा जिसका कर्म है और
उसको वैसा फल मिलता है। जो कुछ तुमको मिल चुका
ेगा वह भी तुम्हारे अपने ही कर्म का फल होगा।

तुम कर्म को नहीं मानते तो फिर यह मानना पड़ेगा कि
को रचने वाली जो शक्ति है वह निर्दयी है और वह
र्म सजा देती है। २५-२६ वर्ष का एक लड़का बल्देवसिंह
ा काम करता है जब वह एक वर्ष का था तो किसी रोग
उसकी टाँगें बेकार होगई थीं. वह लाठियों के सहारे बड़ी
थोड़ी दूर चल सकता था। वह मेरे पास कभी कभी
उसको यह बहम है कि कोई सन्त या महात्मा उन टांगों
र सकता है। मैंने उसे समझाया कि बच्चा कर्म का फल
ाना पड़ता है। यह तेरे प्रारब्ध कर्म का फल है क्योंकि
एक वर्ष की आयु में तो तूने कोई पाप किया नहीं।

इसलिये मेरी शिक्षा है कि जब तक चोला है खुशी से जीवन गुजारो। खूब कमाओ। स्वयं खाओ और किसी दुखिये की सहायता करो। निर्धन माँ-बाप का कोई होनहार बच्चा है उसको पढ़ाओ ताकि उसका जीवन बन जाय। यह मेरी शिक्षा नहीं है किन्तु दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलालजी की शिक्षा है। किसी का बुरा मत सोचो। किसी के साथ हेरा फेरी न करो। हमेशा बुरे कर्म से बचो। दाता दयालजी का एक शब्द है—

ऐ मेरे प्यारे भाई, रखो सँभल के चलना।
खोटे न कर्म करना, खोटी न बात कहना॥
दुख दोगे दुख मिलेगा, सुख दोगे सुख मिलेगा।
मारोगे तुम किसी को, फिर गम पड़ेगा सहना॥
कौल व ख्याल करतब, दरिया से हैं मुशावा।
तुम देखना न इनकी, लहरों में पड़के बहना॥
मन इन्द्रियों पर भाई, जब्त रखना तुम बराबर।
जाबित बने रहोगे, खुशहाल होके रहना॥
अपनी नशिश्त रखना, तुम आत्मा पर हरदम।
आतम स्वरूप रह कर, संसार में विचरना॥

यह है दाता दयाल की शिक्षा। इस समय जितने भी धर्म और पंथ हैं, कोई कहता है कि राम को पूजो, कोई कहता है कि कृष्ण को पूजो, कोई कहता है कि हजरत ईसामसीह को पूजो, कोई कहता है हजरत मुहम्मद को पूजो, कोई कहता है कि बाबाफकीर को पूजो आदि आदि क्योंकि इनकी पूजा करने से तुम्हारे पापों से क्षमा मिल जायगी, लेकिन मेरा अनुभव यह बताता है कि जब तक मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रगट होता है और उनके तरह तरह के काम करता है और मैं नहीं होता तो फिर कौन उनकी सहायता करता है ? उनका अपना ही ख्याल, अपना ही विश्वास और अपनी ही श्रद्धा, हम प्रकाश स्वरूप हैं। जब तक कोई आदमी अपने आप

काशमय नहीं बनायेगा या उसके अन्त समय पर प्रकाश उसके
ा नहीं आयेगा, उसको अपने कर्म को भोगने को दूसरा चोला
पड़ेगा। उसको कोई रोक नहीं सकता चाहे वह बाबा फकीर
ला है चाहे वह बावा सावनसिंहजी महाराज का चेला है।
वह ईसा मसीह का अनुयायी है या किसी देवी देवता का
ा है। यह मेरा अनुभव है मगर दावा नहीं।

हिन्दुओं में जब किसी का अन्त समय आजाता है तो उसके पास
ा जलाते हैं। क्यों? ताकि उसको यह ख्याल रहे कि मेरा
र प्रकाश या ज्योती है। आप लोग आये हो और नाम मांगते
ं दूसरे गुरुओं की तरह नाम नहीं देता। मेरा बचन ही नाम
ो उसको समझ कर अपने अन्तर में साधन करता है उसको
पहुंचता है। केवल बाबा फकीर को धन दौलत देने या मत्था
या गुन याने से किसी का बेड़ा पार नहीं होगा। मैं अपने
झूठे गुरुइज्म के पाप से बचाना चाहता हूं क्योंकि कर्म का
बको भोगना पड़ता है चाहे कोई गुरु हो, चाहे कोई चेला हो।
ा आप अपने मन पर कंट्रोल रक्खो। अपने निजी स्वार्थ के
कसी को तंग मत करो। किसी का माल हड़प न करो। किसी
धोका न करो। यदि आदमी की नीयत साफ है और वह
वार्थ के लिये कुछ नहीं करता तो उसको कोई पाप नहीं।
ा देश है। जहां तक हो सके किसी का भला कर जाओ।
खिये की सहायता कर जाओ। हमने जीवन में करना क्या
ाने आपका या अपने रूप का ज्ञान प्राप्त करना है। हमारा
है? हमारी सुरत का शरीर प्रकाश है और उसका प्राण
। सुरत स्वयं क्या है? यह कहने सुनने की बात नहीं।

ार में रहते हुए हमारा कर्तव्य क्या है? किसी पूर्ण पुरुष के
ं जाकर उसके बचन सुनकर और समझ कर अपने रूप को
है। हमारा रूप आत्मा है। हमने अपने आपको प्रकाशमय

बनाना है। हमने जीवन कैसे व्यतीत करना है। सुनो—

देह धरा तो देय तू, करम धरम सतज्ञान।
करम धरम सतज्ञान से, और का हो कल्याण॥

हमको ऐसा क्यों करना है ? यदि तुम अन्त समय प्रकाश में न गये और इस जन्म के कर्मो का फल भोगने के लिये दूसरा जन्म लेना पड़ा तो जो कुछ तुमने किया हुआ है उसका ही तुमको फल मिलेगा। इसलिये अच्छे कर्म करो ताकि अच्छा फल मिले। ऐसा काम करना जिससे दूसरों का भला हो और उनको लाभ पहुँचे।

देह धरा तो देय तू, अन्न द्रव्य का दान।
अन्न द्रव्य के दान से, तेरा हो कल्याण॥

भूके को रोटी दो और प्यासे को पानी पिलाओ। जो विद्या पढ़ना चाहता है उसको विद्या पढ़ाओ। इससे तुम्हारा कल्याण होगा। चूंकि तुमने दिया है इसलिये तुमको मिलेगा। हमने दिया हुआ है इसलिये हमको मिलता है। जो देता नहीं उसको मिलता नहीं। यह नियम है।

देह धरा तो देय तू, मुख से मीठे बैन।
मुख के मीठे बैन से, सबको हो सुख चैन॥

मीठी बानी बोलो ताकि दूसरे का दिल न दुखे। किसी का दिल न दुखाना, अहिंसा परमोधर्मः है। दुनिया में हिंसा और अहिंसा चलती ही रहती हैं। गर्मी, सर्दी, वर्षा, भूचाल से लाखों जीव मर जाते हैं। सब से बढ़ कर अहिंसा क्या है ? अपने आपको दुखी न करना। लेकिन घरों में स्त्री, पुरुष, बाप बेटा, भाई-भाई अपने कड़ुवे बचनों से एक दूसरे का दिल दुखाते हैं और घर में अशान्ति पैदा करते हैं। फिर इस बुरे कर्म का फल भोगना पड़ता है। इसलिये इस संसार में रहते हुए मीठे बचन बोलना बड़ा आवश्यक है। घरों में शान्ति रक्खो और प्रेम से रहो। यही सबसे उत्तम धर्म है। तब ही तो मैंने शिक्षा को बदला है। अपने घर में शान्ति रखना ही

से बड़ा धर्म है।

देह धरा तो देय तू, औरों को सम्मान।
औरों के सम्मान से, तुझे मिलेगा मान॥

हम अपने आपको बड़ा समझ कर दूसरों का अपमान कर देते हैं गलती है। दूसरों की इज्जत करना सीखो। तुम्हारी इज्जत ो। जो व्यवहार तुम अपने लिये चाहते हो वही तुम दूसरों से ।

देह धरा तो देय तू, सतगुरु का सत नाम।
सतगुरु के सतनाम से, पावेगा विश्राम॥

मैं यह सतज्ञान ही तो देरहा हूं। जो कुछ मैं कहता हूं वह मेरे काश पर आता है। उससे मुझे शान्ति मिलती है। दूसरे के परोपकार करना तुम्हारा अपना परोपकार है। जब तुम किसी हायता करते हो तो तुमको शान्ति मिलती है। जब तुमको आता है तो पहले तुम्हारा अपना मन दुखी होता है। फिर का दुखी होता है।

देह धरा तो देय तू, प्रेम प्रीति परतीत।
प्रेम प्रीति परतीत से, होगा तेरा हित॥

ादि तुम दूसरे से प्रेम प्रीति करते हो और तुमको दूसरो के हित है तो इससे तुम्हारा भला होगा।

देह धरा तो देय तू, विद्या बुद्धि विचार।
विद्या बुद्धि बिचार से, हो सच्चा उपकार॥

हां तक होसके दूसरों को ठीक राय दो और निःस्वार्थ सहा- रो।

देह धरा तो सेव कर, सेवक का यह धर्म।
सेवा कर गुरुदेव की, समझि भक्ति का मर्म॥

रु की सेवा क्या है? रुपया पैसा देना गुरु की सेवा नहीं है यह भी इस दुनिया में काम आता है? गुरु की सेवा यह है—

दर्शन करे बचन पुनि सुने, सुन सुन कर नित मन में गुने।
गुन गुन काढ़ि लेय तस सारा, काढ़ि सार तस करे अहारा ॥
कर अहार पुष्ट हुआ भाई, जग भौ भय सब गये नसाई ॥

सत्संग में बैठ कर बचनों को सुनना, समझना और उन पर अमल करना ही गुरु की भक्ति है। और तो सब संसार का व्यवहार है। तुम लोग यहाँ आये हो। यहां अस्पताल है। बीमारों की सेवा होती है। प्रकाशन पर व्यय होता है। निर्धनों की यथा शक्ति सहायता की जाती है। रुपये की तो यहां भी आवश्यकता है। मगर यदि तुम यह समझो कि रुपया देने से तुम्हारा अवागवन समाप्त हो जायगा तो यह गलत है। हाँ इससे भी तुम्हारा कल्याण होगा क्योंकि यह रुपया अच्छे काम में खर्च होता है। चूंकि यह पब्लिक का रुपया है इसलिये इसका फल भी उनको ही मिलेगा।

स्वामीजी महाराज ने लिखा है—

गुरु नहिं भूका तेरे धन का, उन पै धन है भक्ति नाम का ॥
पर तेरा उपकार करावें, भूके नंगे को दिलवावें ॥

जो गुरु गुरुयायी करके लोगों के पैसे से अपनी जायदाद बनाता है और अपनी मोटरें खरीदता है वह गुरु नहीं है।

शिष को ऐसा चाहिये, गुरु को सब कुछ देय।
गुरु को ऐसा चाहिये, शिष का कुछ ना लेय ॥

यह रहस्य है हुजूर महाराज ने लिखा है कि हम अमीरों का साथ इसलिये देते हैं कि उनके पैसे से यहां निर्धनों की सहायता होती है और उससे धनी और निर्धनी दोनों का ही भला होता है। गरीब सतसंगी लोगों को हुजूर महाराज आने का किराया दे दिया करते थे और उनसे कह दिया करते थे कि एक वर्ष से पहिले मत आना। और जब आओ तो केवल आठ आने का प्रशाद और एक गज कपड़ा लाना। इससे अधिक मत लाना। लेकिन आज कल का गुरु-इज्म तो खाने पीने का साधन बन चुका हैं। इसलिये मैं फकीर के

में अवतार लेकर अनामी धाम से सचाई वर्णन करने आया हूं।

देह धरा अच्छा भया, देय देय अब देय।
धन दे मन दे देह दे, अशरण को दे गेह ।।

तन मन और धन से दुखियों की सेवा करो और अशरण को
। दो। आप लोग सुन कर चकित होंगे कि यहां जो लोग आते
ह यहाँ कोई सेवा का काम हो तो करने को तैयार नहीं। कोई
विछाने को तैयार नहीं। क्यों ? क्योंकि मैं रोचक और भयानक
नहीं कहता। यदि मैं भी कहता तो यहां भी सेवा करते।
ो जगह पर जहाँ रोचक और भयानक बातें बताई जाती हैं वहाँ
रुपया भी देते हैं और बड़े बड़े अमीर और पढ़े लिखे लोग मिट्टी
ोकरियाँ उठाते हैं और बैलों की जगह आदमियों से हल
ाये जाते है। यह लोग अज्ञानवश उनके जाल में फँसे हुए हैं।
कारण करोड़ों अरबों रुपया इन डेरों में जमा होगया। न राम
ो के अन्तर आकर सहायता करता है और न कृष्ण। न हजरत
मद, न कोई देवी देवता किसी के अन्तर आकर सहायता करता
ौर न बाबा सावनसिंह न बाबा फकीर। यह सब जीवों का
ा ही मन, अपना ही विश्वास और अपना ही कर्म है। यदि
चक्र से निकलने में कोई तुम्हारी सहायता कर सकता है तो वह
काश, जो तुम्हारा अपना ही आत्मा हैं। लोगों को अज्ञान में
ा गया। इसका परिणाम यह हुआ कि मानव जाति आपस में
गई। आपस में घृणा द्वेष पैदा होगया। लड़ाई झगड़े और रक्त-
शुरू होगया।

इस दशा को देख कर सन्त प्रगट होते हैं कि जीवों को सचाई
जाँय कि तुम्हारा ही मन और तुम्हारा ही विश्वास राम है,
कृष्ण है, वही बाबा सावनसिंह महाराज या बाबा फकीर या
ी और गुरू का रूप धारण करके तुम्हारे सामने प्रगट होता है।
असलियत की समझ मुझे कैसे आई ? जब मेरा रूप लोगों के

अन्तर प्रगट होकर उनकी सहायता करता है और मैं नहीं होता और न मुझे कोई पता होता है। तुम लोग आये हो। तुमको सच्चा ज्ञान देरहा हूं। अब यदि ज्ञान की दृष्टि से मन्दिर की कोई सेवा करे तो मुझे बहुत खुशी है और मैं उसका कृतज्ञ हूं।

देह धरा अच्छा भया, जी औरों के हेत।
औरों का उपकार है, भव तरने का सेत॥

तुम प्रकाश स्वरूप हो, ब्रह्मस्वरूप हो। साधन करके प्रकाश को प्रगट करो और संसार में परोपकार कर जाओ। अपने लिये मत जीओ किन्तु दूसरों के लिये जीओ। इस विचार से जो भी कर्म तुम करोगे उसका तुम पर कोई प्रभाव न होगा। यदि अपने लिये करोगे तो वह तुम्हारा कर्म बन जायगा। फिर उसका फल तुमको भोगना पड़ेगा। इसका प्रमाण मेरा अपना जीवन है। मैं बड़ा निर्धन था। रेलवे में नौकरी मिल गई। मैंने बड़े परिश्रम से काम किया क्योंकि रोटी का सवाल था। अब यहां भी काम करता हूं। मानवता मंदिर बनाया लेकिन यह कभी मेरे स्वप्न में नहीं आया और न मेरे मिलने वाले कभी स्वप्न में आते हैं। क्यों ? क्योंकि यह काम मैंने दूसरों के लिये किया है। अपने लिये नहीं मगर वह जो रेलवे में अपने पेट के लिये नौकरी की वह रेल गाढ़ी, इंजन और तार अब तक भी मेरा पीछा नहीं छोड़ते। कभी कभी स्त्री, लड़का और माँ बाप स्वप्न में आजाते हैं। मैं दूसरों के लिये जिन्दा हूं। मेरा कोई निजी स्वार्थ इस मन्दिर से नहीं है। मैं मन्दिर से कभी कोई अनुचित लाभ नहीं उठाता। यदि कभी मन्दिर से मेरे घर सब्जी जाती है तो मैं उसका मूल्य देता हूं। यदि मन्दिर के डाक्टरों से कोई काम कर, वाऊँ या इलाज के लिये अपने घर बुलाऊँ तो उसको फीस देता हूं। मैंने मन्दिर में डाक्टर से एक दांत निकलवाया था। उसके पाँच रुपये दिये थे।

।। मनुष्य बनो ।।

देह धरा तो देय अब, जब लग तेरी देह ।
देय· देय दे देह से, देह नेह और गेह ।।

रों को प्रेम और शरण दो । यह भी जीवन गुजारने का एक । आप आये हैं मुझे अपनी ड्यूटी पूरा करने का अवसर या है । लाभ उठाना आपका काम है ।

देह धरा तो देय तू, तन मन निज मन देह ।
देह खेह हो जायगी, फिर कौन कहेगा देह ।।

मन और निज मन देना क्या है ? तन से और मन से किसी ा करना और मन देना है । यह विश्वास कर लेना है कि यह ोड़े दिन का है । इसका अभिमान न करना और शरीर का न होना और मन को अच्छे काम में लगाना और अच्छे देना चाहये । अब मुझे यह पता लग गया कि मेरा रूप दूसरों र प्रगट होता है और उनकी सहायता करता है और मैं नहीं ो मुझे यह निश्चय हो जाना ही तन और मन देना है । मन श्वास ही टूट गया । जब आदमी दसवें द्वार को छोड़ कर में जाता है तो उस समय निज मन नहीं रहता ।

जीना मरना एक है, दोनों एक समान ।
नर को देही जब मिली, कर सबका कल्यान ।।

न और मृत्यु कुछ नहीं है । प्रकाश शरीर में आजाता है चित बुद्धि और अहंकार पैदा हो जाते हैं । यदि जीवन में को समझ कर इनसे अलग होगये तो तुम्हारा कल्याण है इनको सत मान कर इनमें फँस गये तो फिर दूसरा चोला गा ।

नदी बहे नहिं आपको, फल नहिं खावे पेड़ ।
जो नर ऐसा नहीं है, उसे काल का ऐड़ ।।

अपने लिये नहीं बहती, वृक्ष अपने फल स्वयं नहीं खाता । ों की सेवा करते हैं । ऐसे ही आदमी जब तक जीवन है

किसी दूसरे का भला कर जाय ।

मर जाऊँ मांगू नहीं, अपने तन के काज ।
परमारथ के कारनें, मोहि न आवे लाज ॥

आप लोग आते हैं चार पैसे भी देते हैं । इससे रोगियों का इलाज होता है । दुखियों की सहायता होती है । पुस्तकें छपती हैं और लोगों को मुफ्त भेजी जाती हैं किन्तु मैं अपने लिये कुछ नहीं लेता ।

सन्तन का मत है यही, देह देह कुछ देह ।
जो नहीं देगा देह को, देह अन्त में खेह ॥

दूसरों को देना ही सन्त मत है, जो दूसरों से माँगते हैं या अपने स्वार्थ के लिये किसी से लेते हैं यद्यपि उनके पास उनके गुजारे के काफी है वह सन्त नहीं है ।

सहज सहज की चाले चाल, तब समझे गति माया काल ।

हमेशा शान्त चित होकर अभ्यास करो । जल्दी करने की आवश्यकता नहीं । सब विचारों को भूल कर सत्संग में बैठो और ध्यान देकर सत्संग सुनो । जो कुछ सुनो सत्संग के बाद उस पर विचार करो । फिर उस पर अमल करो । यदि किसी बात में शंका हो तो बाद में पूछलो । जो आदमी जल्दी में खाना खाता है या घबराहट में खाता है वह खाना पचता नहीं है और बीमारी पैदा करता है । यदि स्त्री क्रोध की दशा में या अशान्त होकर खाना बनाती है तो जो भी उस खाने को खायगा विचार की फिलोसोफी(philosophy of thought) के अनुसार उसको अशान्ति आजायगी । हर एक काम सहज ढंग से करो । जो आदमी घबराता नहीं, संसार में वही सफल होता है । न घबराना ही सहज पृति है । इस प्रकार जो काम तुम करोगे, उसमें बरकत होगी । विचार की धार काम करती है जब खाने लगो तो सब से पहिले बच्चों को दो, गर्भवती स्त्री को दो और बूढ़ों को दो । फिर आप खाओ ।

मेरे पड़ौस में एक प्रोफेसर तलवार रहता था। वह डबल एम० था। उसकी स्त्री बी०ए० थी। जब वह खाना खाने बैठता तो ी स्त्री घर के सारे झगड़े उसके सामने रख देती। तलवार को ग होगया। वह बड़ा दुखी हुआ। स्त्री भी दुखी थी। मेरी स्त्री कहा करती थी कि इसकी कोई सहायता करो। मुझे उसके रोग ारण ज्ञात था लेकिन मैं चुप रहता। एक दिन मेरी स्त्री कहने लगी कि यहां गली सड़ी सत्संगिन आती हैं और आप ी पीठ पर हाथ फेर देते हो लेकिन इस बेचारे की आप कोई ता नहीं करते। मैंने कहा कि जब मैं समाधि से उठूँ उस वह मेरे पास आये। जब वह आई तो मैंने उससे कहा कि पति को प्रेम से खाना खिलाया करो। कोई लड़ाई झगड़े की उसके सामने न रक्खो। अपने प्रेम से उसको हर समय खुश ।। यह विश्वास करो कि वह स्वस्थ हो जायगा। फिर मैंने र से जाकर कहा कि तुम विश्वास रक्खो कि तुम स्वास्थ हो ोगे। थोड़े दिनों में वह स्वस्थ होगया। यह मेरे जीवन के व हैं। यह तुमको सुखी रहने की युक्ति बता रहा हूं। यदि स्त्री है और मन पर काबू है तो उसके हाथ का बना हुआ खाना से कई रोग दूर हो जाते हैं। अनुसुइया के बारे में तुमने पढ़ा —

शब्द योग की करे कमाई, कुछ दिन गुरु संगत लौलाई ।।
गुरु बिन पावै भक्ति न ज्ञान, गुरु बिन मिटै न मोह न मान ।।

तुम लोग आये। गुरु को रुपये दिये। मत्था टेक दिया। यह क्ति नहीं है। यह तो संसार का व्यवहार है। सत्संग में बैठकर ही बात को समझ कर उस पर चलना गुरुकी भक्ति है। तुम ा कल्याण स्वयं करोगे। दूसरा कोई नहीं कर सकता। इन माओं ने भेद नहीं बताया और पर्दा रक्खा और लोगों को । गुरु नाम है समझ, विवेक और ज्ञान का।

गुरु बिन सार तत्व क्यों सूझे, गुरु मिले तो सब कुछ सूझे ॥

सार तत्व यह है कि मैं प्रकाश स्वरूप हूं। प्रकाश मेरा शरीर है। और शब्द मेरा सांस है और मैं इनसे अलग हूं। मगर इस बात की समझ जल्दी आती नहीं है। सोच समझ कर प्रकाश का साधन किया करो। मैंने आपको बता दिया कि जीवन कैसे व्यतीत करना है। जो कुछ हमारे साथ हो रहा है यह सब हमारे अपने ही कर्म का फल है और हमारी नीयत का फल है। मालिक तो उसको मिलता है जिसकी नीयत शुद्ध है किन्तु हम लोगों की नीयत शुद्ध नहीं है। हम लोग तो हेरा फेरी करते है इसलिये हम अशान्त हैं। हम लोगों को गुरु नहीं मिला। आज कल तो जो भी उठा, गुरु बनके बैठ गया और गद्दी बनाली। मैं न गुरु हूं न महात्मा हूं। न हिन्दू हूं न मुसलमान, न सिख न ईसाई। मैं एक इंसान हूं। यह मेरी समझ में आया है।

गुरुमत हो मन मत को त्याग, गुरु बिन पंथ के पंथ न लाग।

गुरु मत का अर्थ है गुरु की राय। हम लोगों ने गुरु की राय को तो पकड़ा नहीं और अपनी अलग अलग टोलियाँ बना के बैठ गये। डेरे और सम्प्रदाय बना लिये। इसका परिणाम यह हुआ कि लड़ाई झगड़े। धार्मिक झगड़े और रक्त पात।

कबीर निगुरा ना मिले, पापी मिले हजार।
एक निगुरे के सीस पर, लख पापी का भार ॥

दुनिया ने यह समझ लिया है कि हमने नाम ले लिया, गुरु धारण कर लिया। जो आदमी किसी नियम पर जीवन नहीं बिताता वह खतरनाक होता है और वही निगुरा होता है। पठान हिन्दुओं को कैद कर लिया करते थे लेकिन यदि कोई उनसे शरण मांगता तो उसके लिये वह अपनी जान निछावर करते थे क्योंकि उनका यह नियम था।

जिसका कोई नियम नहीं उसका कोई विश्वास नहीं। जो आदमी

ी नियम पर चलता है वह दूसरों को हानि नहीं पहुंचाता। रा आदमी हानि पहुंचा देता है। अब मान लो कि एक आदमो ाबा फकीर को गुरु मान लिया लेकिन वह किसी नियम का न्द नहीं है तो वह गुरु वाला नहीं हुआ। इस अज्ञान ने जीवन कर दिये इसलिते सत्संगी भटकते फिरते हैं।

गुरु वही जो शब्द सनेही, गुरु बिन और न सेई।

एक शब्द तो हमारे अन्तर में है और दूसरा शब्द यह है जो ह से कह रहा हूं। गुरु वाणी या बचन कहता है। इस बाणी सरों को शान्ति मिलती है और मानसिक दुख दूर होते हैं। गुरु ज्ञान देता है कि तुम हो कौन।

लक्ष का लक्ष वाच का बाच।
गुरु का रूप लख भक्ति में राच॥

गुरु के रूप को समझो। तुम लोगों ने तो गुरु के चेहरे को ही समझा हुआ है। गुरु है समझ ज्ञान और विवेक मगर यह प्राप्त होगा जब तुम अपने अन्तर में प्रकाश और शब्द को पकड़ोगे। जिस स्त्री की दहली से चिट्ठी आई है उसने गुरु भी धारण ा हैं और श्रेणी भी पास की। बीन भी सुनी और दुनिया में ति भी की। उसका गुरु चोला छोड़ गया। चूंकि उसको यह नहीं कि वास्तव में गुरु क्या है इसलिये वह ६० वर्ष की आयु शान्त है। वह मुझे लिखती है कि मेरी सहायता करो। आज खुश हो लेकिन समय आयेगा कि तुम दुखी भी हो सकते हो। तरह वह स्त्री मुरली या बीन सुना करती थी तो बड़ी खुश कन्तु अब वह अशान्त है, क्योंकि उसने गुरु के रूप को नहीं ा। इसलिये राधास्वामी मत कहता है कि पूरे गुरु को ढूंढो। ा असावधान है। मैं स्पष्टरूप से इसलिये कहता हूं कि जो लोग ास आयें वह मेरे बाद पथ भ्रष्ट न होजांय और उनको ी न आजाय।

गुरु संगत है सत का संग। सत के संग धार सत रंग ॥

बाहर के गुरु के बचन सुनना और उसके दर्शन करना ही सत्संग हैं।

गुरु की भक्ति रहे निष्काम। धर्म अर्थ मुक्ति सत काम ॥

गुरु की भक्ति निष्काम होनी चाहिये। जो सांसारिक वस्तुओं के लिये गुरु के पास जाता है वह गुरु भक्त नहीं। लेकिन जो सांसारिक वस्तुओं के लिये गुरु के पास जाता हैं उसकी भी कामनायें पूरी होती रहती हैं।

गुरु से पावै बिना प्रयास, ताते कर गुरु दया की आस ॥

यदि गुरु पूर्ण है और तुम ध्यान से उसका सत्संग करते हो तो बिना अधिक परिश्रम करने के तुम शान्ति प्राप्त कर सकते हो।

गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान।
गुरु बिन नाम हराम है, जा पूछो वेद पुरान ॥

लोगों ने इसका अर्थ गलत समझा है। इसका अर्थ यह है कि बिना समझ और ज्ञान के यदि कोई काम करोगे तो हानि उठाओगे। बाबा फकीर गुरु नहीं है। बाबा फकीर के कथन को समझो, अमल करो और लाभ उठाओ।

गुरु रूप न समझे कोय, भरम में पड़े अज्ञानी।
गुरु को मानष जान कर, भक्ति का करें व्यबहार।
सो प्रानी अति मूढ़हैं, कैसे जांय भवपार ॥
देह के बने अभिमानी ॥
गुरु को मानष जानकर, सीत प्रसादी ले।
सो तो पशु समान हैं, संशय में अटके ॥
गुरु तत्व न जानें ॥
गुरु को मानष जानकर, मानष करें बिचार।
सो नर मूढ़ गँवार हैं, भूल रहे संसार।
मोह के फाँस फँसानी ॥

मैं कहा करता हूं कि मेरे मरने पर मेरे मिलने वाला कोई
ा तो उसका अर्थ होगा कि उसने मेरी शिक्षा को नहीं समझा ।
? क्योंकि यदि लड़का मरा तो रोया और गुरु मरा तो रोया ।
अन्तर है ?

गुरु को मानष जानकर, भेड़ की चलते चाल ।
वह वन्धन को क्यों तजें, व्यापै माया काल ।।
पड़े योनि की खानी ।।

जो आदमी बाबा फकीर या बाबा सावनसिंहजी महाराज को
समझता है तो यदि वह अन्त समय पर लेने आजायेंगे तो उस
को दूसरा जन्म अवश्य लेना पड़ेगा । यह मेरा अनुभव है ।

गुरु नाम आदर्श का, गुरु है मन का इष्ट ।
इष्ट आदर्श को ना लखे, समझो उसे कनिष्ट ।।
बात बूझे मनमानी ।।

यदि शब्द और प्रकाश नहीं खुला तो जिस गुरु से नाम लिया
है और जिसका रूप तुम्हारे अन्दर प्रगट होता है तो उसको
मानो और उसको प्रकाश और शब्द स्वरूपी समझो तब तुम्हारा
ाण होगा ।

गुरू भाव घट में रहे, अघट सुघट की खान ।
जिसे समझ ऐसी नहीं, वह है मूढ़ महान ।।
नहीं गुरु रूप पिछानी ।।
चेला तो चित में रहे, गुरु चित के आकाश ।
अपने में दोनों लखे, वही गुरू का दास ।।
रहे गुरु पद घट ठानी ।।

यह मत समझो कि तुम्हारा गुरु होशियारपुर या व्यास या
या और कहीं रहता है । वह हर समय तुम्हारे साथ रहता
ाबा सावनसिंहजी महाराज कहा करते थे कि गुरु जगल में
पहाड़ों में भी तुम्हारे साथ रहता है । बात तो ठीक है मगर

उन्होंने खोल कर नहीं बताया। लोग यह समझते हैं कि बाबा सावनसिंह जंगलों और पहाड़ों में उसके साथ रहते हैं।

सुरत शिष्य गुरु शब्द है, शब्द गुरू का रूप।
शब्द गुरू की परख बिन, डूबे भरम के कूप॥
नर जन्म गँवानी॥
गुरू ज्ञान का तत्व है, गुरू ज्ञान का सार।
गुरु मत गुरु गम जो लखे, फिर नहिं भौ भय भार॥
कमल जैसी गति आनी॥
राधास्वामी सतगुरु सन्त ने, कही बात समझाय।
जो नहिं माने वचन को, उरझ उरझ उरझाय॥
कौन समझे यह बानी॥

—o—

नेकी

नेकी का रास्ता लो, और नेक काम करलो।
दामन को दिल के 'मकसूद' के मोतियों से भरलो॥
नेकी का इस जहाँ में, मिलता है नेक समरा।
नेकी का नेक समझो, हर वक्त तुम नतीजा॥
बेखौफ बन के नेकों की, राह को पकड़ लो।
छोड़ो बदी को नेकी को, अपने मन में भरलो॥
गुरुदेव की हिदायत, हरदम रहे नजर में।
मक्खी शहद की बनना, फूलों के रस को भरलो।
कहते हैं राधास्वामी, सत्वक्ता उनको मानो।
माया भरम को छोड़ो, सतगुरु को मन में धरलो॥

—o—

गृहस्थियों के साधन

(स्वामी रामकृष्ण परम हंस के बिचार)
(महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज)

(१)

आंख मिचोली के खेल में यदि अन्धे बने हुए लड़के ने किसी को या तो फिर वह न चोर रहता है न उसकी आँखों पर पट्टी रहती है। अब वह मुक्त है, जहां चाहे वहां जाये। इसी र इस संसार के खेल में जिसने परमात्मा के चरण कमल हैं वह बन्धन से मुक्त हो गये हैं। संसारी पदार्थ उसको नहीं सकते। जिसने अपने आपको परमात्मा की मौज के आधीन दिया है वही मुक्त है।

(२)

बरसात के दिनों में गाँव में मछली पकड़ने के लिये खेतों में की टट्टी लगा देते हैं। उस टट्टी की झाँझरी से चमकते हुए की धार को बहते हुये देख कर छोटी छोटी मछलियां बड़ी ता से उसमें प्रवेश करती हैं। परन्तु जहां एक बार उसके आगईं फिर निकलना कठिन हो जाता है। वह पकड़ ली है और उनको मार दिया जाता है। केवल एक दो सयानी यां अपने साथियों की दशा को देख कर दूसरी ओर कूद है और दूसरी राहों से निकल भागती हैं। इसी प्रकार अज्ञानी संसार के माया जाल के चमक दमक को देखकर उसमें फँस हैं। और जहां फँसे फिर बहुत ही दुख सहते हैं और अन्त में भ्रष्ट हो जाते है। सच्चे सुख और आनन्द के अधिकारी वे लोग हैं जो दूसरों के अनुभव से लाभ उठाकर कनक द्रव्य) और कामिनी (स्त्री) से अपने आपको अलग थलग रख रमात्मा के चरण कमल की शरण लेते हैं।

(३)

भक्त रामप्रसाद इस संसार को स्वप्न का खेल बताते हैं। जहाँ किसी में परमात्मा का प्रेम उत्पन्न होगया फिर यहाँ संसार उसके लिए सुख का स्थान बन जाता है और जनक (राज ऋषि) के समान खाता पीता और भोग बिलास करता हुआ वह जीवन व्यतीत करता है। इस जनक में बड़ी शक्ति थी। उसको किसी बात की कमी नहीं थी। उसने जगत परमात्मा दोनों के सुखों का स्वाद लिया। जब दूध पीता था तब भी उसका चित्त परमात्मा के ध्यान में लगा रहता था।

(४)

किसी ने श्री रामकृष्णजी से पूछा, "क्या यह सम्भव है कि गृहस्थ आश्रम में रह कर भी परमात्मा का स्मरण किया जाये ?" श्री रामकृष्णजी ने मुसकरा कर कहा, "मैंने अपने गांव में एक स्त्री को देखा कि गोद में बच्चे को दूध पिलाती हुई ढेकी से चावल भी कूटती जाती थी और हाथ से भूसी भी निकालती जाती थी। साथ ही ग्राहक से बात चीत भी कर रही थी। वह उससे कहती थी, 'कल तक तुम्हारे यहाँ मेरा इतना दाम हुआ था और अब आज इतना हुआ इत्यादि।' उसके काम एक ही समय में कई हैं परन्तु उसका मन ढेकी के मूसल की ओर ध्यान लगाये हुये था कि कहीं वह हाथ पर न पड़ जाये और कुचल कर उसको बेकाम करदे। संसार में रहो परन्तु परमात्मा का स्मरण चित्त में सदैव बना रहे। उससे हटे नहीं कि फिर तुम्हारा कहीं भी ठौर ठिकाना न होगा।"

(५)

जो मनुष्य संसार के फँसाने वाले व्यवहार में रहकर अपने मन को भक्ति के अभ्यास में लगा रहता है वह सच्चा शूरवीर है। सच्चा वीर पुरुष शिर पर बोझ लिये हुए जिस ओर चाहे दृष्टि करे। इसी प्रकार पूर्ण मनुष्य संसार के धर्म के बोझ को शिर पर लिये हुए अपनी आंखों को परमात्मा की ओर लगा रखता है।

(६)

निहारियां सिर पर पांच घड़े लिये हुये सखी सहेलियों से
दुख सुख कहती जाती हैं परन्तु उनका मन घड़ों में पिरोया
है और घड़ा सुरक्षित रहता है। इसी प्रकार धर्म मार्ग के
वाले को सदैव ध्यान रखना चाहिये कि उसका चित्त सत्
से हट कर असत् और अधर्म की ओर तो नहीं जाता।

(७)

जस प्रकार देहाती गाने वाले एक ही समय में दोनों हाथों से
बजाते हुये गाते फिरते हैं उसी प्रकार ऐ गृहस्थियो ! तुम भी
से ससार का काम करो परन्तु परमात्मा का नाम बराबर
रहो।

(८)

जस प्रकार व्यभिचारी स्त्री घर का काम काज करती हुई
में अपने प्रीतम को और उसके मिलाप के समय को बराबर
करती रहती है वैसे ही ऐ गृहस्थियो ! तुम भी संसार का
ार करो परन्तु अपना चित्त परमात्मा में सदैव लगा रक्खो।

(९)

या तुम जानते हो कि संसार में रह कर किस प्रकार निर्बन्ध
मुक्त रहना होता है ? कीचड़ की मछली कीचड़ में रहती है
उसको कीचड़ कभी नहीं लगता।

(१०)

राजू का भारी पल्ला नीचे जाता है और हलका ऊपर को
उठा रहता है। मनुष्य का हृदय भी ठीक तराजू की डंडी के
हैं और दो पल्ले दो प्रकार के संस्कार हैं। पहिला संसार का
नाम का प्यार, मान प्रतिष्ठा का विचार, दूसरे विवेक, वैराग
परमात्मा का प्रेम। यदि पहिले को श्रेष्ठ माना जाता है तो
का हृदय परमात्मा से विमुख हो जाता है। परन्तु जब दूसरे
ख्य माना जाता है तो उसका चित्त संसार से फिरा हुआ और
त्मा से लगा रहता है।

निष्काम कर्म या सेवा

सन्तों की बात को सन्त ही जान सकते हैं या जिसको वह जनाना चाहें वह जान सकता है। वे त्रिकालदर्शी होते हैं अर्थात भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों समय के ज्ञाता होते हैं। ससार में सन्त समय समय पर प्रकट होते आये हैं। समय के अनुसार उन्होंने अपनी वाणी कही है और मानव जाति के कल्याण के लिये विविध उपाय बताये हैं। जो उपाय एक समय के लिये मौजूं थे वह दूसरे समय पर उपयोग नहीं रहे और बाद में जो जो सन्त महात्मा आये वे समय के अनुसार उनमें परिवर्तन करते गये।

कबीर साहब की वाणी को ही लीजिये। वह गूढ़ है किसी की समझ में नहीं आती। उस समय ऐसी ही शिक्षा की आवश्यकता होगी। इसी शताब्दी में महर्षि शिवब्रतलालजी महाराज जो परम सन्त थे और संसार में अद्वितीय लेखक हुये हैं जिन्होंने लगभग चार हजार पुस्तकें हर धर्म सम्प्रदाय के विषय पर लिखीं मगर वह भी परम दयाल फकीरचन्दजी महाराज को आज्ञा दे गये कि तुम शिक्षा में परिवर्तन कर जाना। आगे चल कर मेरी शिक्षा बपयोगी नहीं होगी।

यही बात परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज प्राय: अपने सत्संगों में कहा करते हैं। प्राचीनकाल के सन्तों तथा ऋषियों की बाणियां गूढ़ हैं। उनको आज का मानव ढकोसला समझता है। शायद इसीलिये महर्षिजी महाराज ने परम दयाल फकीरचन्दजी महाराज को आज्ञा दी हो कि शिक्षा को बदल जाना।

परम सन्त परम दयाल फकीरचन्द जी महाराज ने उन गूढ़ रहस्यों को जो समझ में नहीं आते थे और जिन पर पर्दा पड़ा हुआ

लोग उन रहस्यों को जानने को भटकते फिरते थे, उन गूढ़ यों को खोल खोल कर वर्णन किया है।

महाराजजी फकीर के चोले में अवतार है। इस समय ८९ साल आयु में अपने जीवन के अनुभव के आधार पर शिक्षा दे रहे हैं मानव जाति का भला हो। 'मनुष्य बनो' उसी शिक्षा को शित कर के आपकी सेवा कर रहा है। इसमें किसी का कोई र्थ नहीं है।

सन्त जन ही जानते हैं कि किस से क्या सेवा करानी है। परम-लजी महाराज की मुझ पर अपार दया है कि 'मनुष्य बनो' कार्य मुझ से ले रहे हैं। यह काम मेरे ही कल्याण को दिया है। शरीर रोगी है। कोई न कोई रोग लगा रहता है। मगर कार्य से मेरे कर्म कट रहे हैं और मैं इसके काम में लगा रहता यह उनका मुझ पर बड़ा भारी अहसान है।

प्रचार कार्य

जो शिक्षा आध्यात्मिक ज्ञान के साथ साथ मानवता की शिक्षा यालजी दे रहे हैं उसकी आज मानव जाति को बड़ी आव-ता हैं। इसके अनुसार चलने से मानव अपना जीवन सुख न्त से व्यतीत कर सकता है।

क्या अच्छा हो कि ग्राहक बन्धु इस शिक्षा के प्रचार में सहयोग ताकि औरों का भी भला हो सके। यही निष्काम सेवा है। यही सेवा है। यही ज्ञान दान है। क्या आश्चर्य कि इस निष्काम से आपके सारे कार्य निष्काम हो जाँय और आप सरलता से मार्थ की कमाई कर सकें। जब तब मन कामनाओं से भरा गा साधन अभ्यास में भी सफलता प्राप्त होना दुर्लभ है।

देवीचरन 'मीतल'

———

Manavata Mandir, Hoshiarpur.
year ended 31 st March 1976
Year ended 31.3.1975

	INCOME	
1,41,658.77	By Donation Received	195250.14
222.00	By Subscription Received	216.00
2,950.00	By Rent Received	3025.00
5,962.65	By Interest Received	7454.00
946.95	By Manavta Dispensary Receipts	1080.20
Nil.	By Free Eye Hospital Receipts	66.00

151740.37

Total c/o 207019,34

Chartered Accountants :
SHARMA & CO.
12-4-1976

Trustees
Mohan Lal
R. R. Chada, Harbans Lal

Faqir Library Charitable Trust (Regd)

Income & Expenditure Account for the

r ended 31-3-75

	TO MANDIR EXPENCES		
)4.57	Salary & Bonus		13,533.77
30.22	Printing, Stationery, Publication		28,209.81
36.40	Postage & Telegrams		4,598.70
0.00	Audit Fees		700.00
0.00	Legal Charges		310,00
12.80	T. A. & Conveyance		298.25
58.40	Free help to deserving students		794.80
12.65	Free aid to blind & orphans		7952 05
34.83	Langer		11611.09
43.78	Newspaper & Periodcals		352.25
40 00	Spreading & Propagating the teaching of Rishis & Saints		578.30
)6.42	Bldg repair & maintenance charges		1230.01
20.82	General Repair Charges		508.40
48.75	Electric charges		3921.30
57.49	Miscellaneous charges Manavata Mandir		1424.81
25.76	Bank Commission		50.90
30.73	Satsang Expences		7466.96
75,57	Gardening water supply charges		1011.80
51.32	Sanitation charges		306.28
	DISPENSARY CHARGES		
50.78	Medicines	3169 35	
23.84	Miscellaneous charges	449 43	3618.78
	Depreciation written off		
38.01	Furniture	1726 89	
21.00	Library	86.86	
38.78	Building	9847.89	
20.57	Sanitary Fittings	752.93	
08.31	Electric Equipment	302.60	
56.25	Bedding	Nil	
Nil	Medicrl equipment	577.15	13293.49
	Balance (Excess of Income over Expendituae.		
12.22			105319.59
740.37			207021 34

e :—Out of ineome of Rs 1,05 319.59 Rs. 79150.17 were spent in the construction of Free Eye Hospital Building.

ial Auditor : **Ghansham Saroop** *Secretary :* **M.R. Bhagat**

परमदयाल फकीरचन्द जी कृत हिन्दी पुस्तकें

फकीर की जीवनी	२)५०
धर्म प्रकाश भाग १	)७५
धर्म प्रकाश भाग २	
दुर्गादास कृत)	१)
ावन उर्फ जीवन रहस्य	१)
का सार भाग १ व २	५)
पुराण रहस्य	२)२५
गुरु वक्त	१)५०
वाणी भाग १, २, ३	३)
	)५०
ासा की व्याख्या	२)५०
शब्द योग	१)
से परे	१)
था अपार के परे	१)२५
र्शन	१)२५
ार्मिक खोज	१)२५
हिमा	१)
दना	)७५
पुरुष	१)
त्व, सचाई और शान्ति	१)
अन्त	१)२५
ाम की व्याख्या	१)५०
न दाता भाग १ व २	२)
ान	१)
की खोज	१)
वकास	१)
	१)
ेश	)७५
ाप्ति	)३०

अनुभव ज्ञान प्रकाश	१)
ज्ञान योग	१)

अन्य धार्मिक पुस्तकें

सत सनातन धर्म या सत मानव धर्म	३)
जगत कल्याण	)७५
विश्व धर्म भाग १ व २ व ३	१)७५
फकीर बचनामृत	)५०
कर्म भोग या मौज भाग १व२	१)७५
राधास्वामी शताब्दी पर मेरी भेंट भाग १ व २	३)
जगत निस्तार	१)२५
जगत उभार	१)
मानव कल्याण भाग १, २, ३, ४, ५	६)
अद्भुत मोती	१)
५० वर्षीय फकीर अनुभव	)७५
मेरा ८३ वर्षीय अनुभव	१)२५
मानवता युग धर्म	)८०
आकाशी रचना	)५०
आजादी की कुंजी	)७५
शिव फकीर पत्रावली	१)५०
हृदय उद्गार	१)
कबीर सार शब्द व्याख्या	१)
रचना का भेद	)७५
नव बिवाहितों को उपदेश	)२५
उन्नति मार्ग	)५०
गूढ़ रहस्य व्याख्या	२)५०
फकीर प्रवचन	)७५
सार भेद	)२५

Regd. No. L-ALG—28

पुस्तकें

हमारे यहां

महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज

कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक,
स्त्री उपयोगी,
स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी
पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती'
सिलसिले के उपन्यास तथा
परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज
कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें
मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।
डाक खर्च सब का अलग है।
पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से
भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—

शिव साहित्य प्रकाशन मंडल

या

सम्पादक मनुष्य बनो

शिव भवन, लेखराजनगर,
अलीगढ़ (उ० प्र०)

Printed by S. Mittal, Data Dayal Printers, Aligarh